# गंगा भारत की जीवनधारा

**यतीन्द्र नाथ चतुर्वेदी**
वाराणसी (उ.प्र.)

एक अनुमान के अनुसार आजादी के बाद से अब तक 30 लाख में से 20 लाख तालाब, पोखरे, झील, कुएं आदि गायब हो कर पूरी तरह खत्म हो चुके हैं। लगभग 4500 नदियां सूख गईं। देश के कई राज्यों में कुछ जगह भूजल 40 मीटर तक नीचे जा चुका है। नीति आयोग के अनुसार सन् 2030 ईस्वी तक देश के 40 प्रतिशत लोगों की पहुंच पीने के पानी तक नहीं होगी।

**रूपरेखाः जल**

सौर मण्डल के सभी ग्रह द्रव जल से वंचित हैं। धरती पर महासागर का होना इसकी विशेषता है। धरती की सतह पर पानी की उपलब्धता जीवन के अंकुरित होने का एक महत्वपूर्ण कारण है। धरती पर यदि पानी ज्यादा होता तो धरती का धरातल डूब जाता और यदि कम होता तो मंगल और शुक्र ग्रह की तरह शुष्क ग्रह हो जाता। समूची धरती पर ढ़ाई प्रतिशत पानी पीने योग्य है। पृथ्वी पर उपलब्ध सम्पूर्ण जल में से लगभग 2.7 प्रतिशत जल स्वच्छ है, जिसमें से लगभग 75.2 प्रतिशत जल ध्रुवीय क्षेत्रों में जमा रहता है और 22.6 प्रतिशत भूजल के रूप में विद्यमान है। शेष जल झीलों, नदियों, वायुमण्डल, नमी, मृदा और वनस्पति में मौजूद है।

धरती पर पानी से प्यास ज्यादा है। विश्व में एक अरब से कहीं अधिक जनमानस प्रदूषित पानी का उपयोग पीने के लिए करता है। दुनिया की लगभग 8 अरब की आबादी में से 40 प्रतिशत जन–जीवन बुनियादी साफ पेयजल से वंचित हैं। विश्व के 2.7 अरब लोग और 98 करोड़ बच्चे उचित सफाई सुविधाओं से वंचित है! दुनिया में 88 करोड़ लोगों को पीने के लिए साफ पानी नहीं मिल रहा है। विकासशील देशों के अस्पतालों के 50 प्रतिशत कमरे गंदे पानी से फैलने वाली बीमारियों से पीड़ित लोगों से भरे हैं।

जल की सभी अनुभूति जीवन से जुड़ी होती हैं। प्राणिमात्र के लिए जल की सुरक्षा आवश्यक है। जल की चिंता विश्व की चिंता है। जल को भी पीड़ा होती है। जल की सांसो में संसार जीवित है। जलस्रोत किसी भी देश का अस्तित्व होते हैं। जल को फिर से रोपना होगा। पानी को सहेजना फिर से सीखना होगा। मरते हुए जल को बचा लेना इंसानियत की सुरक्षा है।

दुनिया की आबादी में भारत का हिस्सा 17 प्रतिशत है और उसके पास केवल 4 प्रतिशत शुद्ध और स्वच्छ पेयजल है। पानी की उपलब्धता में भारत 180 देशों में 133 वें स्थान पर है। पानी की गुणवत्ता में भारत 122 देशों में 120 वें स्थान पर है। भारत पानी के अकाल के मुहाने पर खड़ा है। भारत के मीठे और शुद्ध जल को हासिल करने को लेकर अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने अपनी निगाह गड़ा रखी है। भारत में बोतलबंद पानी का व्यापार करनेवाली लगभग 150 कंपनियां और उनके लगभग 1200 से भी अधिक बाटलिंग प्लांट हैं। एक लीटर मिनरल वाटर बनाने में दो लीटर साफ पानी खर्च करना पड़ता है। देश के 742 जिलों में से 246 जिले सूखे की मार झेल रहे हैं। भारत के 1 करोड़ 95 लाख ग्रामीण नागरिकों को साफ पीने का पानी नहीं मिलता है। शहरी इलाकों के 11 प्रतिशत घरों में साल के कई दिन किसी भी प्रकार का पानी नहीं मिलता। देश के करीब 742 जिलों के 158 इलाकों में भूजल खारा हो चुका है। देश के करीब 385 जिलों में नाइट्रेट की मात्रा तय मानकों से काफी ज्यादा है। देश के करीब 267 जिलों के विभिन्न क्षेत्रों में फ्लोराइड की अधिकता है। देश के कई इलाकों के पानी में आर्सेनिक, सीसा, क्रोमियम, कैडमियम और लौह तत्वों की भारी मात्रा मौजूद है। विश्व बैंक रिपोर्ट के अनुसार उत्तर प्रदेश की 12 प्रतिशत बीमारियों की वजह प्रदूषित जल है। जलस्रोतों का महत्व नहीं समझा गया। जल स्रोतों पर जगह–जगह

अमानवीयता के संस्करण प्रस्तुत कर रखे गए हैं। कुएं, कुंड आदि जलस्रोत हड़प लिए गए। नागरिक की विवशता मौन है। हैण्डपंप सूख गए और बोतलबंद पानी सबके पहुँच में है।

हमारे घरों में नलों से जो पानी आता है, वह प्रदूषित और कई बीमारियों को पैदा करने वाले जीवाणुओं से भरा होता है। टपकता हुआ नल सप्ताह में 90 लीटर तक जल बर्बाद कर देता है। गंदे पानी से होने वाली बीमारी डायरिया से 5 साल से कम उम्र के लगभग 3 लाख 86 हजार बच्चों की हर साल मौत होती है।

पीने का साफ पानी, स्वच्छता, स्वास्थ्य और शिक्षा मिलना, यह किस्मत और जन्म स्थल पर निर्भर नहीं करना चाहिए। यह एक जन्मसिद्ध अधिकार है, जो अमीर और गरीब दोनों को समान देना चाहिए। निःशुल्क पीने को पानी, निःशुल्क शिक्षा, निःशुल्क स्वास्थ्य सुविधाएं इंसानियत की प्राथमिकता तो होनी ही चाहिए। शुद्ध जल सभी तक निःशुल्क पहुँचाना प्राथमिक धर्म होना चाहिए। पीने का साफ पानी मुफ्त में मिलना चाहिए। पानी पर सबसे पहला हक हर प्यासे का है, फिर किसान का। जिस समाज का बहुमत पीने का पानी खरीद कर पाने को मजबूर हैं उस समाज से हम भ्रष्टाचार छोड़ने की अपेक्षा कर रहे हैं।

**परिकल्पनाः गंगा**

नदी गंगा के तट पर कई सभ्यताएं आकर बसीं और छिन्न–भिन्न हो गईं। आज उन्हीं सभ्यताओं से पनपी सभ्यता ने गंगा नदी को नगर के किनारे अकेले ही छोड़ दिया है। हमने गंगा नदी को देखा है तट पर अकेले। गंगा के तट प्यासे रह गये हैं। शांत तटों पर गंगा का अमृत सूख रहा है। रेत के बंजर किनारों पर प्यास का अंकुर फूट रहा है। सूखती हुई जल धारा से समाज अपनी प्यास बुझाना चाह रहा है। प्यासे हैं लोग। खामोश है गंगा।

भारत की धमनियों में गंगा रक्त बन कर जीवन के साथ बह रही है। गंगा अपनी ममता का आँचल फैलाये भारत के नगरों और गाँवों के किनारे–किनारे अपनी संतानों की राह निहार रही है। अपनों से वंचित हो चुकी गंगा कब तक मायूसी लिए प्रवाहित होगी, पता नहीं। सबको जीवन देने वाली गंगा आज स्वयं की जिन्दगी से जूझ रही है। उसकी ही संतानें उसकी ही जान का संकट बन रही हैं। माँ की सुरक्षा पुत्र का प्रथम धर्म है। जल की धारा प्राकृतिक होती है। गंगा केवल एक धर्म की विषयवस्तु नहीं। गंगा के किनारे सभी धर्म पोषित होते हैं। गंगा को संरक्षण चाहिए। गंगा की रक्षा भारत के प्राण की सुरक्षा है। संवेदनशून्य समाज गंगा को नगरों की नालियों का पानी पिला रहा है। इस विशालतम प्यास को कीचड़ मिश्रित जल पीना उसकी सामाजिक मजबूरी है।

नदियों के समाप्त हो जाने पर धरती बंजर हो जाती है। गंगा वजूद है हमारा। इतिहास पुनः लौटेगा। गंगा पुनः लौटेगी। पवित्र जल आचमन के लिए सभी को मिल सकेगा। इस अध्ययन बौद्धिक का मूल लक्ष्य यही है।

**इतिहास**

शास्त्रों के अनुसार ब्रह्मा के कमण्डल से निकलकर विष्णु के चरण से तरंगित हो भगवान शिव की जटाओं से होते हुए गंगा, सगर के साठ हजार पुत्रों को मोक्ष प्रदान करने हेतु इस धरा पर कई पीढ़ियों की तापस्या के पश्चात सगर के वंशज महाराजा भगीरथ की घोर तपस्या के बाद ज्येष्ठ माह शुक्ल की दशमी तिथी, हस्त नक्षत्र, बुधवार, व्यतिपात, गर, आनंद, कन्या राशि में चंद्र, वृष राशि में सूर्य आदि दस योग को साथ लेकर गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुईं।

**"गंगा गंगेति यो ब्रूयात योजनानां शतैरपि**
**सर्व पापैरविनिर्मुक्तो विष्णु लोकं सगच्छति।।"**

पवित्र देवभूमि भारत देश में गंगा सहित सभी नदियों को नदी नहीं वरन उन्हें माता का स्वरूप माना जाता है। गंगा इस देश की आस्था की आराध्य एवं ईश्वरीय प्रदत्त हैं। गंगा को परमपावन मोक्षदायिनी, पापहरणी, सलिला आदि आदि के नामों से सुशोभित करने वाले ऋषियों, मुनियों, संतों तथा मनीषियों ने दैवी स्वरूप शक्ति तथा चमत्कारी विशेषताओं के कारण ही उन्हें अमृत स्वरूपिणी के नामों से सुशोभित किया है। भारतवंशियों को यह विश्वास है कि जीवन के अंत समय में गंगा के जल की एक बूंद भी मुख में पड़ जाए तो मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

हिमालय के गोमुख से निकलकर जड़ी बूटियों, औषधियो, खानिजों व अनेक अकल्पित रहस्यमय गुणों से युक्त पेड़–पौधों के बीच बहता हुआ गंगा जल, अमृतमयी हो जाता है। इनके विलक्षण गुण कई बार परीक्षण के पश्चात प्रमाणित हो चुके हैं।

गोमुख (उद्गम स्थल) (भागीरथी), गंगोत्री (अहुनू तीर्थ), भैरव घाटी, टिहरी (भागीरथी–भिलंगना संगम), देवप्रयाग (भगीरथी–अलखनंदा संगम), रुद्र प्रयाग, कर्ण प्रयाग, ऋषिकेश, हरिद्वार, गढ़मुक्तेश्वर, सोरों (कछलाद्ध), सूकर क्षेत्र (वाराह अवतार क्षेत्र), कन्नौज, प्रयाग, विंध्याचल (मिर्जापुर), काशी, पटना, फरक्का (बंगाल) गंगासागर आदि गंगा के प्रमुख तीर्थ हैं।

वेद प्रवाह की गायत्री, सभी के मुख एवं हृदय में वास करने व शास्त्रों में धर्मोपदेश देने वाली सरस्वती, धन्य–धान्य–सुख, त्रिभुवनी राज्य प्रदान करने एवं भगवान श्री हरि की प्रियतमा लक्ष्मी, उमा रू प भगवान शिव स्वरूप ज्ञान करने वाली, शक्ति बीजा लोक कल्याणी एवं पालनी, तपस्या की अधिष्ठात्री, सर्व धर्म प्रतिष्ठित–धर्म द्रवा श्रीमद्भागवत में गंगा आदि गंगा के सात स्वरूप हैं।

**यस्या जलानी दिवि, या प्रथितं रसायाम भूमौ च ते भुवनमंगल दिग्रवितानम**
**मन्दाकिनी दिवि भोगवतीति चासौ गंगेती चट्टे चरणाम्बु पुनाति विश्वम।।**

अर्थात–हे गंगे, तुम सारे विश्व के सौभाग्य की प्रतीक हो, जिसका शुभ्र वैभव तीनों लोकों पर आच्छादित है, जो पानी तुम्हारे चरण प्रक्षालित करता है और जिसे स्वर्ग में मंदाकिनी, पाताल में भोगवती एवं धरा पर गंगा के नाम से प्रचलित है।

**गंगे तव दर्शनात मुक्तिः दर्शनात स्पर्शनात पनात्तथा**
**गंगेति कीर्त्तनात स्मरणा देव गंगायाः सद्यः प्रापात प्रमुच्यते।।**

अर्थात–गंगा दर्शन, स्पर्शन, गुणकीर्तन, जलपान एवं केवल स्मरण मात्र से मनुष्य सद्यः पाप मुक्त हो जाता है।।

**गंगा पुण्यजलां प्राप्ते त्रयोदशी विवर्जये**
**शौच आचमनं चौव, निर्माल्यम मलघर्षमते।।**

अर्थात–पुण्य तोया पवित्र गंगा में शौच, मुखधावन, दंतधावन, कुल्ला आदि नहीं करना चाहिए। पूजा का निर्माल्य, मल घर्षण; मल–मूत्रादिद्ध, बदन घर्षण नहीं करना चाहिए।

**यावत भू–मण्डलं धत्ते नगाः**
**नागश्च सादराः तावत्तिष्ठति जाह्नवयां**
**श्री विष्णोश्चरणोदकम।।**

अर्थात–जब तक पर्वत, नाग और समुद्र इस भूमण्डल को धारण किए रहेंगे। तब तक भगवान विष्णु का चरणोदक गंगाजल इस भारत भूमि में प्रवाहित होता रहेगा।

पवित्र गंगा भारत के 2071 किलोमीटर और बंग्लादेश के 439 किलोमीटर विशाल भूभाग को सींचते हुए अपनी सहायक नदियों के सहयोग से 10 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के विशाल उर्वर भूमि का निर्माण करती है। लगभग 100 फुट से अधिक की गहराई लिए गंगा को भारत की राष्ट्रीय नदी का गौरव प्राप्त है तथा प्रयागराज से हल्दिया के मध्य लगभग 1600 किमी का जलमार्ग भारत का राष्ट्रीय जलमार्ग है। गंगा भारत के 40 प्रतिशत आबादी के लिए शुद्ध जल और अन्न हेतु एक मात्र जलस्रोत है। लगभग 25 करोड़ नागरिकों की आजीविका गंगा पर निर्भर है, बिना कुछ निवेश के। दुनिया के सभी तीर्थस्थलों में सर्वाधिक धर्मयात्रियों को आकर्षित करने वाली, भारत की राष्ट्रीय नदी गंगा जहाँ भारतीय संस्कारों के निर्वहन के साथ भारत–वंशियों की आस्था गंगा के तट पर आकर ही विश्राम करती है। देश–दुनिया का ऐसा कोई कोना नहीं है जहाँ गंगा के प्रति आस्था रखने वाले लोग न रहते हों। गंगा का संदर्भ न केवल गंगा की अविरलता, निर्मलता अपितु 90 करोड़ उन सनातन–धर्मियों के ह्रदय से भी है, जो गंगा के प्रति गहन आस्था रखती हैं।

नदी समाज का दर्पण है। समाज आज स्वयं समाज से अधिक एक विश्वगांव हो गया है। नदी के दर्पण में समाज चाहे वह एक सीमित समाज हो या किसी स्थान, प्रान्त, देश या सम्पूर्ण विश्व का समाज, अपने चेहरे देखकर चेहरे पर आये दाग जहाँ स्वच्छ कर सकता है, वहीं अपने युगीन आनन को नदी के कालजयी आनन में देखकर समाज, विश्व समाज, स्वयं को बेदाग़ और आभामय रख सकता है। नदी के दर्पण में आज ही नहीं, अतीत का इतिहास भी तो अपने समाज की भीड़ लिये समाज, विश्व समाज तक की बदलती पीढ़ियों का बदलता रहता दाग़–बेदाग़ एक चेहरा ही है। इतिहास खुद अपने समय का एक सामाजिक चेहरा है–नदी के दर्पण में अंकित जन्मती–मरती पीढ़ियों के समाज–विश्व समाज–का चहेरा। इस तरह नदी और समाज के साथ सभ्यता की बदलती पीढ़ियों में पीढ़ी दर पीढ़ी गत उस इतिहास के बीच दर्पण और चेहरे का तथ्यपरक यथार्थमूलक घनिष्ठ सम्बंध है। प्रगतिशील भारत की सही पहचान और लोक–संस्कृति की सम्यक जानकारी के लिए नदियों का विस्तृत अध्ययन आवश्यक है। नदी का जल प्रवाह जीवनदायक और राष्ट्रीय विकास में सहायक होता है।

सिर्फ नदी नहीं है गंगा, यह मानवजाति के लिए प्रकृति का अद्भुत वरदान है। अस्तित्व है यह हमारा। भारत की थाती, हमारी माँ, संस्कृति, प्रकृति और पुरखों की धरोहर है गंगा। परम्पराएं पवित्र नदी गंगा की धड़कनें हैं। आम आदमी इसकी आत्मा। गंगा का कलरव भारत का श्रृंगार है! पवित्र गंगा पुरखों का अंतिम अवशेष लिए सदियों से बह रही है! हमारे पीढ़ी–दर पीढ़ी पूर्वजों की अस्थियों को आत्मसात, सहेज कर परंपराओ को संरक्षित, सुरक्षित रखा है गंगा ने। पुरुखों की भस्म से घुले पवित्र अमृत एक बूँद गंगाजल का आचमन आज भी भारत की आस्था नित्य करती है। उस जल को सीधे पी रही है, जो कि सीवर और तेजाब से ओत–प्रोत है। विरासत में प्राप्त पवित्र जल को आने वाली पीढी तक पहुँचाना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। पिछली पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक गंगा को ले जाने का पवित्र संकल्प लेना होगा।

भारत का अस्तित्व गंगा से है। भारत की जीवन धारा गंगा ने भारतीय संस्कृति को सहेजा है। कई सभ्यताओं को बनते और विनष्ट होते देखा है गंगा ने। लगभग 40 करोड़ मानव जाति के पोषण करती वैश्विक धरोहर पवित्र गंगा जज्बातों से वंचित नहीं है। गंगा भारत की आस्था और

जनजीवन की धड़कन है। जल की धारा प्राकृतिक होती है। जल की प्राप्ति का भरोसेमंद स्थल होता है तट। तीर्थस्थल होता है बहते हुए जल का तट। नदियों का बहुत सा पानी अनायास ही बह गया। पर समय की नदी के बहाव को किनारा नहीं मिलता। बहता हुआ पानी वापस दुबारा कभी नहीं लौटता। जिन तटों से नदियों का पानी बह गया वहाँ दुबारा नहीं पहुँचा कभी। और मझधार में कितने ही किनारे बह गए पर चलती नदी के सामने जो आता है बह जाता है।

गंगा और उसके तट पर बसा जीवन, गंगा का जल, आस्था की सदियों ने जिसे अमृत कहा, आधुनिक भारत ने उसे राष्ट्रीय नदी का सम्मान दिया। राष्ट्रीय नदी होने के नाते गंगा का जल राष्ट्रीय सम्पदा है। इस जल को नष्ट करना राष्ट्र को क्षति पहुँचाना है। उस गंगा की अविरलता और निर्मलता दोनों पर आज एक बड़ा सवाल है।

वर्त्तमान विश्व पेयजल संकट से जुझ रहा है और विश्वगाँव में अँजुली भर गंगा–जल सूख रहा है। हिमालय से निकली जीवनदायिनी गंगा, गंगा सागर तक नहीं पहुँच पा रही हैं। भारत पानी के अकाल के मुहाने पर खड़ा है। पानी सूख रहा, गंगा विलुप्त हो रही और गंगा जल के स्थान पर नगरों का सीवर का जल बह रहा है। जल को प्रदूषित और नष्ट करके प्रकुति से छल हो रहा है, जो पर्यावरण की असहनीय टीस बन चुकी है। अस्तित्व और आस्था के दो किनारों के मध्य प्रवाहित गंगा आज सूख रही कर संकुचित हो रही है। सदियों से इंसानियत का पोषण करती आयी गंगा आज स्वयं शोषित है। हृदयविहीन जीवन जैसे सम्भव नहीं वैसे ही गंगा के बिना इंसानी सभ्यता नष्ट हो जाएगी। यदि गंगा नहीं बचेगी तो इंसानियत का पोषण कौन करेगा? धरोहर का सम्मान नागरिक मूल्यों का सर्वोच्च सम्मान है।

नदी घाटी सभ्यता की विश्व बस्ती में गंगा का तट सभ्यता का तट है, जहाँ धर्म, समाज, संस्कृतियाँ पोषित होती हैं। भारत को समझने के लिए गंगा के तट पर आना होगा। समय की कसौटी पर गंगा का इतिहास भारत के कई सदियों का इतिहास है। इतिहास के पन्नों में गंगा के इतिहास की भौगोलिक सीमा की प्रकृति और गंगा के समाजवैज्ञानिक भौगोलिक इतिहास की विस्तृत सीमा की प्रकृति पृथक और मौलिक हैं।

ऋषियों ने तप की सदियाँ बिता कर हमें गंगा नदी को सौंपा है। गंगा के इसी तट पर रामायण के चरित्र निर्मित होकर संस्कारों की स्थापना कर गये तो कभी महाभारत–कालीन युग ने रिश्तों की रेखाओं पर खड़े होकर इंसानियत की स्थापना किया। शतपथ ब्राह्मण, पंचविष ब्राह्मण, गौपथ ब्राह्मण, एतरेय आरण्यक, कौशितकीय आरण्यक, सांख्यायन आरण्यक, वाजस्नेयी संहिता आदि उत्तर वैदिक कालीन समाज इसी गंगा तट के सामाजीकरण रहे हैं।

गणराज्यों की परम्परा इसी गंगा के तट पर जन्म लेती हैं। भारत के स्वर्ण युग इसी नदी गंगा के तट पर रचे गये। मौर्य और गुप्त वंश के राजाओं ने इसी नदी गंगा के तट प्राचीन मगध महाजनपद पर भारत का इतिहास लिखा। गंगा ने भारत की विभिन्न संस्कृतियों को सहेज रखा है। भारत की कई सभ्यताओं को बनते, तो कई को बिखरते देखा है गंगा ने।

ऐतिहासिक पन्नों के अस्तित्व सम्राट अशोक, विक्रमादित्य, हर्षवर्धन, बादशाह अकबर, बादशाह औरंगजेब, सुल्तान मुहम्मद तुगलक, महान पश्चिमी साहित्यकार वर्जिल और दांते, सिकन्दर महान, कोलम्बस, महात्मा गांधी, तात्या टोपे के गंगाजल और इसकी पवित्रता से जुड़ाव के साक्ष्य आत्मसात कर कहते हैं कि राजनीतिक अस्थिरता और बदलते राजवंशों में भी गंगा सम्मानित और पोषक थीं।

**निष्कर्ष**

जीने के मौलिक अधिकार के रू प में पानी का अधिकार सुनिश्चित है। अनुच्छेद 21 पानी के अधिकार की गारंटी देता है। अनुच्छेद 51–एः पर्यावरण के प्रति, राष्ट्र के प्रति और अपने प्रति कर्त्तव्यों का वर्गीकरण निर्धारित करता है। अनुच्छेद 51–ए (जी) नदियों, झीलों, जंगलों, प्राकृतिक पर्यावरण में सुधार और वन्य जीव की रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का मौलिक कर्त्तव्य निर्धारित करता है।

सभी को शुद्ध जल पाने का मौलिक अधिकार है। प्रकृति ने हमारे लिए पवित्र गंगा को धरती पर अवतरित किया है। उसे प्रदूषित करके मानवता के विरुद्ध एक अनैतिक आचरण हो रहा है। पीने का साफ पानी चाहिए तो गंगा को प्रदूषण मुक्त रखना होगा। मानवीय प्रयास से जल का संरक्षण, शोधन आज समय की माँग है। शोषित जल से समाज का पोषण सम्भव नहीं। निर्मल गंगा के जल प्रवाह की प्रतीक्षा भारत का विशाल जन–समूह कर रहा है। प्रस्तुत अनुसंधान भारत की पवित्र नदी के जीवन और आस्था का मौलिक अध्ययन है। भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, धार्मिक इतिहास–यात्रा में भारतीय सीमांतरों के पार की विश्व–बस्ती में गंगा के सप्तमहाद्वीपीय संघर्षों का अन्तर्राष्ट्रीय संकलित तथ्यों और उनके निष्कर्षों के सैद्धांतिक विवेचन में एक गंभीर एवं मौलिक यह प्रस्तुत अध्ययन प्रारूपित है। इस प्रकार गंगा पर विस्तृत अध्ययन देश की विभिन्नताओं से भरे सबके अपार अथाह विश्व–भीड़ में समय का सारांशमूलक एक न्यायोचित अनुशीलन है।